झुग्गी बस्ती में साक्षरता की गूंज
नवसाक्षर बहनों के सुखद अनुभव

सुहास कुमार

अरब सागर और हिंद-महासागर के संगम के किनारे बसे केरल राज्य से 1989 में चली साक्षरता की लहर आज देश के कोने-कोने में फैल गई है। भारत का कोई भी राज्य इससे अछूता नहीं रहा है। 26 जनवरी 1989 को केरल के इरनाकुलम ज़िले में पूर्ण-साक्षरता अभियान चलाया गया और दिसंबर '89 तक वहां 95 फी सदी लोग साक्षर बन गए। इससे प्रेरणा पाकर बहुत से गांवों व शहरी बस्तियों में प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रम चलाए गए। कमोबेशी इस कार्यक्रम के तहत् काफी लोगों ने पढ़ना-लिखना सीखा है।

अनेक जगहों के आंकड़े सामने रखे गए हैं। इन आंकड़ों के पीछे असलियत क्या है? कुछ गिने चुने लोगों की सफलता की कहानियां भी प्रकाशित की गई हैं। पर आम लोगों के जीवन या सोच में क्या कुछ बदलाव आया है?

इज्ज़त बढ़ी

38 साल की मालती नई दिल्ली की मदनगीर पुनर्वास बस्ती में रहती है। 17 व 12 साल के दो लड़के व 8 साल की एक लड़की है। सिलाई कढ़ाई का काम पीस-रेट पर करती है। पति मैकेनिक है। सभी बच्चे थोड़ा बहुत पढ़े हैं। पढ़ना-लिखना सीखने के पहले भी थोड़ा बहुत घर से बाहर निकलती थीं। बस्ती में पानी व गंदगी आदि की समस्या आने पर औरों का साथ देती थीं। पढ़ना-लिखना आ जाने से ज़िंदगी में खास फर्क नहीं पड़ा, पर मन में अच्छा महसूस करती हैं। बच्चों को भी अच्छा लगता है कि अम्मा भी पढ़ लिख सकती हैं।

50 साल से कुछ ऊपर की चमेली भी मदनगीर की रहने वाली है। सबसे बड़ा लड़का 28 साल का है। बड़ी लड़की 31 साल की। बाकी तीनों बच्चों की उम्र 22, 20 व 19 साल है। सभी अनपढ़ हैं। पढ़ना-लिखना आ जाने से चमेली अपने अंदर बदलाव महसूस करती है। उन्हें पढ़ने

का महत्व समझ में आने लगा है। उन्हें लगता है कि पढ़ना-लिखना सबको आना चाहिए। "पढ़ना-लिखना आने पर ही हम अपनी बात ठीक से कह सकते हैं और तभी लोग सुनते भी हैं। गलत चीज़ के लिए लड़ भी सकते हैं। घर में व बाहर पहले से ज़्यादा मान व इज्ज़त मिलती है।"

आत्मविश्वास जगा

"शुरू में जब क्लास में पढ़ने के लिए जाते थे तो बच्चे हंसते थे। अब उन्हें लगता है कि अम्मा पढ़ गई, हमें भी ज़रूर पढ़ना चाहिए। पढ़ना इतना अच्छा लगा कि बीमारी में भी क्लास में चले जाते थे।"

बड़े लड़के व तीनों लड़कियों की शादी हो गई है। मैंने पूछा, "बहू को पढ़ने नहीं भेजती हो?" बोली, "तीन महीने से वह मायके में है। लड़के बहू में कुछ झगड़ा हुआ। लड़के ने उसे पीट दिया। अब बहू का बाप उसे भेज नहीं रहा है।"

मैंने पूछा, "तुमने रोका नहीं?" बोलीं, "उसने तो सड़क पर मारा, मुझे इसका और भी मलाल है। आजकल मेरा रोज़ उससे झगड़ा होता है कि बहू को जाकर ले आ। मुझे लगता है वह पढ़ा लिखा होता तो ऐसा क्यों करता।"

45 साल की भगवानी देवी दक्षिण पुरी की रहने वाली है। उनका कहना है कि अब वे पैकेट पर लिखे दाम पढ़ लेती हैं। दुकानदार उन्हें बेवकूफ नहीं बना सकता। यह पूछने पर कि आपके पढ़ लिख जाने से क्या घरवालों का रुख कुछ बदला है, बोली, "नहीं, कोई खास नहीं बदला है। सब यही कहते हैं इस उम्र में पढ़ने का क्या फायदा? क्या कोई नौकरी मिल जाएगी। यह तो ज़रूर लगता है कि पहले पढ़ लिख जाते तो अच्छा था। अब घर के काम-काज से फुर्सत ही नहीं मिलती है। चाहते हुए भी पढ़ने में ज्यादा टेम (समय) नहीं दे पाते हैं। साक्षरता अभियान बहुत अच्छा लगा। हम जैसी औरतें भी पढ़ना-लिखना सीख सकीं।"

23 साल की शकुंतला ने, जो एक 5 साल के बच्चे की मां है अभियान में पढ़ना-लिखना सीखा। घरवाला 8वीं तक पढ़ा है। शकुंतला को पढ़ना-लिखना बहुत अच्छा लग रहा है। आदमी भी खुश है। इन्हें अब चिट्ठी पढ़ने व लिखवाने को दूसरे का मुंह नहीं देखना पड़ेगा। इनको लगता है इनका भविष्य सुधर जाएगा। पूछने पर कि क्या आगे भी पढ़ना चाहेंगी, बोलीं "मौका मिला तो ज़रूर पढ़ूंगी।"

सोच-समझ बढ़ी

दो साल से साक्षरता अभियान से जुड़े रहने के कारण बहनों से बातचीत के अवसर मिले हैं। उन्हें बहुत नज़दीक से देखने परखने का मौका मिला है। यह कहना अन्याय होगा कि साक्षरता अभियान ने उनको छुआ नहीं है। बस्ती की बहनों की सोच का दायरा बढ़ा है।

जब वे पहले पढ़ने गईं तो यही सोचती थीं कि चिट्ठी लिख-पढ़ सकेंगी। राशन व अन्य दूकानदार उनसे ग़लत दाम नहीं लेगा। बस का नंबर खुद पढ़ लेंगी। लेकिन धीरे-धीरे उनकी न केवल पढ़ने में रुचि बढ़ी, उन्हें पढ़ने-लिखने का असली महत्व समझ में आया। चाहे घर वाले या पड़ोसी नौकरी मिलने न मिलने का ताना दें, उन्हें लगता है कि पढ़ना-लिखना हर किसी को आना चाहिए। इसे रोज़गार से नहीं जोड़ना चाहिए।

अपने घर-परिवेश की सफ़ाई के प्रति भी वह जागरूक हुई हैं। ज्यादा बच्चे हैं तो बताने में झिझकती हैं। उन्हीं के कारण अपने लिए कुछ भी समय नहीं निकाल पाती हैं, यह भी उन्हें साफ तौर से समझ में आ रहा है। क्लास में आती हैं तो हमजोलियों के साथ हंस बोलकर समय ज्यादा अच्छा गुज़रता है। दो साल से साक्षरता कार्यक्रम चलने से पढ़ाई-लिखाई का माहौल बना है। क्लासों में आने को एक सामाजिक मान्यता मिली है। घरवाले व पड़ोसी यह नहीं सोचते कि वे मटरगश्ती या किसी ग़लत सोहबत में पड़कर समय जाया कर रही हैं।

बुनियादी बदलाव

''बहुत सी बातें कोई पढ़कर सुनाता था तो सच नहीं लगती थीं। खुद पढ़कर लगता है कि वह सब सच है।''

''पहले बैंक जाने की सोच भी नहीं सकती थी, अब खाता खोलने की सोच रही हूं।''

''बहुत से काम जिसके लिए औरों की खुशामद करनी पड़ती थी अब खुद कर लेती हूं।''

''पढ़ने-लिखने का सबसे ज्यादा फायदा यह हुआ कि मेरे साथ के लोग, घरवाले और पड़ोसी अब मुझे कुछ समझने लगे हैं। लोग मेरी बात ध्यान से सुनते हैं। खुद मुझे लगता है कि मेरी समझदारी बढ़ गई है।''

''पढ़ना-लिखना सीख जाने से मेरा आदमी बहुत खुश है। वह पढ़ा-लिखा था। उसे मेरा अनपढ़ होना अच्छा नहीं लगता था।''

''अनपढ़ होने की वजह से पति की बीमारी में बहुत दुख झेलना पड़ा। आज बहुत सी मुश्किलें उतनी बड़ी नहीं लगतीं।''

''राशनवाला अब पूरे पैसे ठीक से वापस करता है। पहले खुदरा रख ही लेता था। अब मैं अंगूठे की जगह अपने साइन जो बनाती हूं।''

''पढ़ना-लिखना सीखने के बाद मुझे लगता है कि मुझे कोई आसानी से बेवकूफ़ नहीं बना सकता।''

□